

डॉ. डेविड एल. मैथ्यूसन, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी, सत्र 30, एनटी थियोलॉजी के प्रकाश में इफिसियों 2 और प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की व्याख्या

© 2024 डेव मैथ्यूसन और टेड हिल्डेब्रांट

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला में दिया गया है। यह सत्र संख्या 30 है, न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी के प्रकाश में इफिसियन 2 और प्रकाशितवाक्य 21 और 22 की व्याख्या।

इसलिए, अब तक हमने जो किया है, वह यह जांचना है कि न्यू टेस्टामेंट में मेरे अपने पढ़ने और न्यू टेस्टामेंट के अध्ययन से मुझे क्या लगता है कि सबसे महत्वपूर्ण बाइबिल-धर्मशास्त्रीय विषय हैं, लेकिन साथ ही अन्य न्यू टेस्टामेंट धर्मशास्त्रों और उन विषयों पर भी नज़र डालें, जिन्हें वे बार-बार उजागर करते हैं।

हमने उन विषयों को इस संदर्भ में देखा है कि कैसे उनकी जड़ें पुराने नियम में हैं, खास तौर पर अक्सर सृष्टि की कहानी, कैसे वे नए नियम या पुराने नियम में विकसित होते हैं ताकि वे मसीह और उसके लोगों में नए नियम में अपनी पूर्णता पा सकें और फिर कैसे वे अंततः नई सृष्टि में पूर्णता में अपनी पूर्णता पा सकें। अब मैं अपने अंतिम सत्र में जो करना चाहता हूँ वह है दो नए नियम के पाठों को देखना, न कि केवल उन विषयों को देखना जो हमने पहले ही कर लिए हैं, बल्कि अब दो नए नियम के पाठों पर वापस जाना है जिन्हें हमने कई बार निपटाया है और देखा है कि उन्होंने नए नियम के विभिन्न धार्मिक विषयों के हमारे उपचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है और वापस जाकर उन पाठों को बाइबिल के नए नियम के धर्मशास्त्र के प्रकाश में विस्तार से फिर से देखना है। मैं जो करना चाहता हूँ वह है, नंबर एक, एक बार फिर प्रदर्शित करना कि कैसे ये विषय इन अंशों में एक साथ आते हैं और कैसे वे इन बाइबिल के धार्मिक विषयों में योगदान करते हैं, लेकिन इन अंशों को इस संदर्भ में देखना है कि कैसे वे स्वयं पुराने और नए नियम के माध्यम से बाइबिल के धर्मशास्त्र के चल रहे विकास में योगदान करते हैं।

हम जो कुछ कहने जा रहे हैं, वह इस समय ज़रूरी नहीं कि नया हो। हम जो कुछ कहने जा रहे हैं, वह बस उन कई पहलुओं को एक साथ लाना होगा, जिनके बारे में हमने पहले इन अंशों के संबंध में बात की है, लेकिन अब हम इन अंशों की व्याख्या या सादृश्य के संदर्भ में उन पर ध्यान केंद्रित करेंगे, न कि इसके हर हिस्से की विस्तृत व्याख्या, बल्कि फिर से विशेष रूप से इस बात पर ध्यान केंद्रित करेंगे कि इन अंशों को बाइबिल के धार्मिक दृष्टिकोण से कैसे पढ़ा जाए। मेरी राय में, आखिरकार, जब हम पुराने या नए नियम में किसी पाठ की व्याख्या करते हैं, तो सबसे पहले, हाँ, हम इसकी व्याख्या करना चाहते हैं और इसके मूल उद्देश्य के प्रकाश में, इसके मूल संदर्भ के प्रकाश में इसका अध्ययन करना चाहते हैं, कि लेखक उस समय परमेश्वर के लोगों से क्या कह रहा था, लेकिन मुझे लगता है कि आखिरकार किसी बिंदु पर हमें यह पूछना होगा कि यह पवित्रशास्त्र के व्यापक सिद्धांत के भीतर कैसे फिट बैठता है, यह पुराने और नए नियम के

सिद्धांतों में प्रमाणित परमेश्वर की योजना के व्यापक मुक्तिदायी ऐतिहासिक विकास के भीतर कैसे फिट बैठता है।

मुझे लगता है कि, एक तरह से, किसी भी अंश के अध्ययन का अंतिम चरण समग्र विकास, पवित्रशास्त्र की समग्र कहानी, बाइबिल धर्मशास्त्र के समग्र विकास में इसके योगदान पर एक नज़र रखना है और यह कैसे इसमें योगदान देता है और यह कैसे बाइबिल धर्मशास्त्र के प्रकाश में प्रकाशित और समझा जाता है। इसलिए मैं दो ग्रंथों की जांच करना चाहता हूँ, और वह है इफिसियों अध्याय 2:11-22 पहला है, और फिर अंतिम प्रकाशितवाक्य 21 और 22 होगा, और फिर से, हम उन पर इस संदर्भ में विचार करेंगे कि वे बाइबिल के नए नियम के धर्मशास्त्र को कैसे विकसित करते हैं, वे इसमें कैसे योगदान करते हैं, उन अंशों की समझ कैसे प्रकाशित होती है और बाइबिल धर्मशास्त्र या नए नियम के धर्मशास्त्र के प्रकाश में देखने पर व्याख्या कैसे समझ में आती है। तो पहला अंश इफिसियों 2, 11-22 है, और मैं इस अंश को पूरी तरह से नहीं पढ़ूंगा। हम इसके कुछ अंशों को पढ़ेंगे, लेकिन अध्याय 2:1-10 में इसके व्यापक संदर्भ में इसे रखते हुए हम पाते हैं कि पौलुस वर्णन करता है कि कैसे परमेश्वर ने अपने लोगों को मृत्यु और पाप के बंधन से बचाया है। वे अपने अपराधों और पापों में मरे हुए थे; वे दुष्ट शक्तियों के बंधन में भी थे, और परमेश्वर ने उन्हें मसीह में जीवित करके और उन्हें जी उठाकर और यीशु मसीह के साथ एकता में बीज बोकर बचाया और बचाया है, और यह सब परमेश्वर के अनुग्रह को प्रदर्शित करने के लिए है जैसा कि पौलुस ने इस युग में और आने वाले युग में परमेश्वर के अनुग्रह और दया के अतुलनीय धन को प्रदर्शित करने के लिए कहा है।

अब, जब कोई इफिसियों के अध्याय 2:11-22 पर जाता है, तो वह पाता है कि अध्याय 2, 1-10 में उद्धार का अर्थ यह भी है कि हम पाप और मृत्यु तथा बुरी शक्तियों के बंधन से मुक्त होकर तथा हमें बचाकर तथा मसीह के साथ एक करके एक नई मानवता का हिस्सा बन गए हैं, इसका अर्थ यह भी है कि यहूदी और गैर-यहूदी मसीह में एक शरीर, एक मानवता में एक साथ जुड़ गए हैं, ताकि हमारे उद्धार के कॉर्पोरेट निहितार्थ हों। मैं यह कहने में संकोच करता हूँ कि अध्याय 2:1-10 व्यक्तिगत है, और ऐसा लगता है कि इसके कॉर्पोरेट आयाम भी हैं, लेकिन निश्चित रूप से अध्याय 2 में परमेश्वर के लोगों के उद्धार का परिणाम यह होता है कि परमेश्वर उन्हें एक नई मानवता में एक साथ जोड़ता है, यहूदी और गैर-यहूदी को मसीह में एक शरीर या एक मानवता में जोड़ता है। अब, किसी भी नए नियम के पाठ में बाइबिल धर्मशास्त्र करने का एक हिस्सा, नए नियम के धर्मशास्त्र करने का एक हिस्सा पुराने नियम के पूर्ववृत्त का पता लगाना है।

मुझे लगता है कि किसी भी नए नियम के पाठ के मुख्य धार्मिक विषयों और विकास के लिए सुराग का एक हिस्सा पुराने नियम के संकेतों, पुराने नियम के उद्धरणों का पता लगाना है जो लेखक की सोच को सूचित करते हैं और जो नए नियम के लेखक के धर्मशास्त्र में योगदान करते हैं। इसलिए दिलचस्प बात यह है कि अध्याय 2, श्लोक 11-13 में, लेखक पुराने नियम से शुरू होता है। इफिसियों के अध्याय 2 और 11-13 में, लेखक अपने गैर-यहूदी पाठकों को मसीह से अलग उनकी पिछली स्थिति की याद दिलाते हुए पुराने नियम से शुरू होता है।

इसलिए, वह कहता है, इसलिए, याद रखें कि पहले तुम जो जन्म से अन्यजाति हो और खतना किए हुए लोगों द्वारा खतना रहित कहलाते हो, याद रखें कि उस समय तुम मसीह से अलग थे,

तुम इस्राएल में नागरिकता से बाहर रखे गए थे और वादे की वाचाओं के लिए विदेशी थे। हमने पहले बिना किसी आशा और दुनिया में ईश्वर के बिना वाचाओं के बारे में बात की थी।

इसलिए मैं मानता हूँ कि श्लोक 11-12 में यह स्थिति अध्याय के बाकी हिस्सों में उलट जाती है। इसलिए अब पॉल आगे बढ़ता है और श्लोक 13 में, यशायाह अध्याय 57 और श्लोक 19 का दिलचस्प ढंग से उल्लेख करके इसके उलट होने का वर्णन करता है। यशायाह अध्याय 57 और श्लोक 19 यशायाह के उस बड़े भाग में हैं, जहाँ वह पुनर्स्थापना के दिन की आशा करता है।

परमेश्वर भविष्य में अपने लोगों को निर्वासन से वापस लाएगा। परमेश्वर अपने लोगों को वापस लाएगा और उन्हें अपने साथ वाचा के रिश्ते में वापस लाएगा। अध्याय 57 और श्लोक 19 में, लेखक कहता है, उनके होठों पर स्तुति पैदा करते हुए, जो दूर हैं और जो निकट हैं, उनके लिए शांति, प्रभु कहते हैं और मैं उन्हें चंगा करूँगा।

अब, इफिसियों 2 में पद 13 कहता है, लेकिन अब मसीह यीशु में, तुम जो पहले दूर थे, मसीह के लहू के द्वारा निकट लाए गए हो। इसलिए दिलचस्प बात यह है कि यशायाह अध्याय 57 और पद 9 में, जिस पाठ का पौलुस पद 13 में उल्लेख करता है, वह इस्राएली जो निर्वासन में थे, दूर थे, और अब उन्हें निकट लाया गया है। लेकिन अब, पौलुस के लिए, यह अन्यजाति हैं जो दूर थे; वे मसीह से अलग थे, उन्होंने इस्राएल के साथ नागरिकता का आनंद नहीं लिया, उन्होंने इस्राएल से किए गए वादे की वाचाओं में भाग नहीं लिया, लेकिन अब वे यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से निकट लाए गए हैं।

दूसरे शब्दों में, पौलुस पहले से ही सुझाव दे रहा है कि इफिसियों 2 में, हम परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना के यशायाह के वादों की पूर्ति पाते हैं। अब, पौलुस सुझाव दे रहा है कि अन्यजातियों को निकट लाया जा रहा है, और मैं इसे इस प्रकार लेता हूँ कि पद 12 में उन्हें जिस चीज़ से अलग किया गया था, अब वे उसका आनंद लेते हैं और उसमें भाग लेते हैं। तो अब उनके पास मसीह है, अब उनके पास नागरिकता है, वे इस्राएल के साथ नागरिकता में भाग लेते हैं, अब वे वादों की वाचा के आशीर्वाद में भाग लेते हैं और उसका आनंद लेते हैं, और उनके पास आशा है, और यीशु मसीह के व्यक्तित्व के माध्यम से दुनिया में परमेश्वर के साथ उनका रिश्ता है।

यह ईश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना और उद्धार के बारे में यशायाह के वादों की पूर्ति है, जैसा कि अध्याय 57 और 9 में लेखक द्वारा यशायाह से की गई अपील से प्रदर्शित होता है। और यह सब यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से पूरा होता है, जैसा कि पौलुस पद 14 से शुरू करते हुए आगे कहेगा, क्योंकि वह स्वयं हमारी शांति है। फिर से संभवतः यशायाह 57 के संदर्भ पर ध्यान दें, लेकिन यशायाह में अन्य पाठ ईश्वर की शांति और ईश्वर द्वारा शांति लाने पर जोर देते हैं। बाद में, हम अध्याय 52 और पद 7 में देखेंगे कि उसने शांति का उपदेश दिया: धन्य हैं उनके पैर जो शुभ समाचार लाते हैं, जो शांति का उपदेश देते हैं।

इसलिए मसीह का हमारी शांति होना भी परमेश्वर के लोगों को पुनःस्थापना लाने के लिए यशायाह के वादों की पूर्ति के रूप में देखा जाना चाहिए। लेकिन यह यीशु मसीह की मृत्यु के द्वारा पूरा होता है, जिसके बारे में पौलुस आश्चर्य है कि वह यहूदियों और अन्यजातियों के बीच शत्रुता और

विभाजन लाने वाली बाधा को हटाता है ताकि पौलुस खुद के लिए कह सके कि यीशु, पद 13 में वर्णित अंतिम व्यक्ति, स्वयं हमारी शांति है जिसने दो समूहों यहूदी और अन्यजाति को एक कर दिया है और बाधा, शत्रुता की विभाजनकारी दीवार को नष्ट कर दिया है। दूसरे शब्दों में, शत्रुता ने एक बाधा बनाई, और उसने अपने शरीर में व्यवस्था को उसकी आज्ञाओं और नियमों के साथ अलग करके ऐसा किया।

इसलिए, कम से कम यहाँ तो पॉल ने व्यवस्था के बारे में सब कुछ नहीं कहा है, लेकिन कम से कम यहाँ तो वह यहूदी और गैर-यहूदी को अलग करने, यहूदियों को परमेश्वर के लोगों के रूप में चिह्नित करने और गैर-यहूदियों को बाहर करने के व्यवस्था के कार्य पर ज़ोर देता है और अब यीशु मसीह की मृत्यु के माध्यम से इसे समाप्त कर दिया गया है। वैसे, कुछ लोगों ने विभाजन करने वाली दीवार को तम्बू की दीवार के बराबर माना है। मुझे यकीन नहीं है कि यहाँ ऐसा ही है।

दरअसल, यहाँ एक अलग शब्द का इस्तेमाल किया गया है जो ज़्यादा अपमान का संकेत देता है। मैं इसे इस तरह से लेता हूँ कि कानून ही बाड़ है। कानून ही वह विभाजनकारी बाड़ या दीवार है जो यहूदियों को अन्यजातियों से अलग करती थी, और अब मसीह ने अपनी मृत्यु के ज़रिए इसे समाप्त कर दिया है और कानून को खत्म कर दिया है जो परमेश्वर के लोगों को विभाजित करता है।

अब, शांति की भाषा, जब पॉल कहता है कि यीशु मसीह स्वयं हमारी शांति है, ने शत्रुता को समाप्त कर दिया है। इसलिए, शांति को मेल-मिलाप के संदर्भ में समझा जाना चाहिए। यीशु मसीह ने यहूदी और गैर-यहूदी के बीच शत्रुतापूर्ण संबंध को शांतिपूर्ण संबंध में बदलकर मेल-मिलाप लाया है।

ध्यान दें कि पद 14 में शांति शब्द कितनी बार आता है। वह स्वयं हमारी शांति है। उसका उद्देश्य दो में से एक नई मानवता को अपने अंदर बनाना था, इस प्रकार शांति स्थापित करना।

श्लोक 15. श्लोक 17. वह आया और उन लोगों को शांति का उपदेश दिया जो दूर थे और जो निकट थे।

इसलिए, परमेश्वर ने मसीह के माध्यम से शत्रुतापूर्ण संबंध को शांतिपूर्ण संबंध में बदल दिया है। एक बार फिर, श्लोक 17 को यशायाह के अध्याय 57 और 9 से सीधे उद्धरण के रूप में देखा जाता है। वह आया और तुम लोगों को शांति का उपदेश दिया जो दूर-दूर के अन्यजातियों में रहते हैं, और उन लोगों को भी जो निकट हैं। साथ ही, यह संभवतः यशायाह अध्याय 52 और श्लोक 7 का एक संकेत है। यशायाह अध्याय 52 और श्लोक 7। पहाड़ों पर उन लोगों के पैर कितने सुंदर हैं जो अच्छी खबर लाते हैं, जो शांति की घोषणा करते हैं और अच्छी खबर लाते हैं, जो उद्धार की घोषणा करते हैं, जो सिंथोन से कहते हैं कि तुम्हारा प्रभु परमेश्वर राज्य करता है।

इसलिए एक बार फिर, मसीह के माध्यम से शत्रुतापूर्ण संबंध को शांतिपूर्ण संबंध में बदलने में यहूदी और गैर-यहूदी के बीच मेल-मिलाप को परमेश्वर के लोगों को निर्वासन से पुनः स्थापित करने के यशायाह के वादों की पूर्ति के रूप में देखा जाता है। दिलचस्प बात यह है कि हम यह भी

देखते हैं कि इसमें निरंतरता और असंततता दोनों हैं। कि दोनों का परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप है।

मसीह में पूर्ति एक नई स्थिति लाती है, इसलिए न केवल हमारे पास यशायाह की पुनर्स्थापना के वादों की पूर्ति है, बल्कि वे, एक अर्थ में, एक नए तरीके से आगे बढ़े हैं जहाँ यहूदी और गैर-यहूदी अब एक दूसरे के साथ मेल-मिलाप कर रहे हैं, बल्कि एक नई मानवता बनाने के एक नए कार्य में परमेश्वर के साथ भी मेल-मिलाप कर रहे हैं। इसलिए, यशायाह में इस्राएल की पुनर्स्थापना के वादे अब यीशु द्वारा यहूदी और गैर-यहूदी को एक शांतिपूर्ण, मेल-मिलाप वाले रिश्ते में एक नई बनाई गई मानवता में एकजुट करने में पूरे हुए हैं।

दिलचस्प बात यह है कि अब फिलिस्तीन की भूमि में नहीं, बल्कि मसीह के व्यक्तित्व में और दुनिया में। वे पुनर्स्थापना के वादों को पूरा होते हुए पाते हैं। हालाँकि, श्लोक 15 हमें यशायाह के आगे के संकेतों की भी याद दिलाता है जब श्लोक 15 कहता है, अपने शरीर में व्यवस्था और उसकी आज्ञाओं को अलग करके, उसका उद्देश्य अपने आप में एक नई मानवता बनाना था।

तो, सृष्टि और नवीनता की इस भाषा पर फिर से ध्यान दें। संभवतः एक बार फिर, हम इसे न केवल परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना की पूर्ति के रूप में पढ़ेंगे, बल्कि यशायाह की नई सृष्टि के उद्घाटन के रूप में भी पढ़ेंगे, जैसा कि यशायाह 53 और यशायाह 65 में वादा किया गया है। तो, यह अब नई सृष्टि में है कि हम मेल-मिलाप करने वाली मानवता को एक-दूसरे के साथ और परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप करते हुए पाते हैं।

इसलिए, यशायाह के मेलमिलाप और पूर्ति का विषय एक नई सृष्टि और एक नई मानवता के निर्माण का विषय है। हम पाते हैं कि यशायाह के अपने लोगों की एक नई सृष्टि में बहाली के वादे अब मसीह के व्यक्तित्व में उनकी मृत्यु के माध्यम से पूरे हो रहे हैं, एक नई मानवता का निर्माण कर रहे हैं, उस कानून को हटा रहे हैं जो एक बाधा प्रदान करता था, और यशायाह के वादे की पूर्ति में यहूदी और गैर-यहूदी को एक नई मानवता में एक साथ ला रहे हैं। हम इस पाठ में भी पाते हैं कि यहाँ, परमेश्वर के सच्चे लोग अब बहाल और नवीनीकृत हो गए हैं।

इसलिए अब परमेश्वर के सच्चे लोग यहूदी और अन्यजाति दोनों हैं। फिर से, आयत 13 में, अन्यजाति लोगों को इस्राएल में नागरिकता से बाहर रखा गया था। अब मैं समझता हूँ कि लेखक कह रहा है कि यहूदियों के साथ मिलकर एक नई मानवता में शामिल होने के द्वारा उन्हें इस्राएल की नागरिकता में शामिल किया गया है।

तो अब हम पाते हैं कि परमेश्वर के सच्चे लोग मसीह में पूरे हो रहे हैं, यहूदी और गैर-यहूदी को एक नई मानवता में मिला रहे हैं। तो, एक बार फिर, निरंतरता और असंततता दोनों हैं। इस्राएल से किए गए वादों को गैर-यहूदियों को शामिल करने और गले लगाने के लिए विस्तारित किया गया है, लेकिन यहूदी और गैर-यहूदी की यह नई मानवता केवल विस्तारित नहीं हुई है; यह नवीनीकृत भी हुई है क्योंकि इसमें केवल गैर-यहूदी ही नहीं हैं जो मेल-मिलाप कर रहे हैं बल्कि अब यहूदी और गैर-यहूदी दोनों परमेश्वर के साथ मेल-मिलाप कर रहे हैं।

और अब मसीह ने उन्हें एक नई मानवता में बनाया है। तो, वहाँ एक नयापन है, एक परिवर्तन है जो घटित होता है, और एक नवीनीकरण होता है। इसलिए, हम यहाँ पाते हैं कि, हाँ, इस्राएल से किए गए पुनर्स्थापना के वादे अब यहूदियों और अन्यजातियों को शामिल करने के लिए विस्तारित किए गए हैं, लेकिन वे एक नए सृजन में पुनर्स्थापित और नवीनीकृत किए गए हैं जहाँ दोनों ईश्वर के साथ मेल-मिलाप करते हैं।

इसलिए दिलचस्प बात यह है कि परमेश्वर के सच्चे लोग, इस्राएल और यशायाह से किए गए वादे, अब यहूदी और गैर-यहूदी दोनों में पूरे होते दिखाई देते हैं जो एक मानवता, परमेश्वर के एक नए लोग में एक साथ आते हैं। इसलिए, हमारे पास परमेश्वर के दो अलग-अलग लोग और उन दोनों से संबंधित वादे नहीं हैं जो अलग-अलग हैं, बल्कि इसके बजाय, हम परमेश्वर के एक लोगों को इस्राएल और यशायाह से किए गए वादों को पूरा करते हुए पाते हैं जिसमें अब यहूदी और गैर-यहूदी एक नई मानवता में एकजुट हो रहे हैं। और पूरा खंड छंद 19-22 में एक महत्वपूर्ण संदर्भ के साथ चरम पर पहुँचता है, जहाँ परमेश्वर के पुनर्स्थापित और नवीनीकृत लोग सच्चे मंदिर हैं जहाँ परमेश्वर निवास करता है।

पूर्णता में, मुझे लगता है कि हम यहाँ जो पाते हैं वह मसीह में परमेश्वर के इरादे की पूर्ति है कि उसके लोग वापस बगीचे के पवित्र स्थान पर जाएँ जहाँ परमेश्वर उसके बीच में निवास करेगा, जो तब मानवता के बाद पूरी होने लगी... अब शत्रुतापूर्ण संबंध हैं; पाप के कारण एक रिश्ते में दरार है, और उत्पत्ति अध्याय 3 में पाप के कारण मानवता और मानवता और परमेश्वर के बीच के रिश्ते में दरार है। अब जब यह तम्बू और पुराने नियम के मंदिर में बहाल होना शुरू होता है, तो हम पाते हैं कि पूरा होना, विशेष रूप से एक नवीनीकृत और बहाल मंदिर की भविष्यवाणी की अपेक्षाएँ, अब परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के मंदिर में निवास करने से पूरी होती हैं। इसलिए, एक बहाल मंदिर के वादे एक भौतिक संरचना में नहीं बल्कि परमेश्वर के लोगों की बहाली से पूरे होते हैं। और हम पुराने नियम में पलायन के अंतिम लक्ष्य, निर्वासन से बहाली के अंतिम लक्ष्य को देखते हैं, जो यह था कि परमेश्वर अपना तम्बू स्थापित करेगा और उनके बीच निवास करेगा।

अब, हम पाते हैं कि यह एक नई मानवता में पूर्ण होता है जो परमेश्वर के मंदिर के रूप में कार्य करता है, जहाँ परमेश्वर अपनी नई वाचा की आत्मा के माध्यम से निवास करता है। इसलिए, पवित्र आत्मा जिसके माध्यम से अब परमेश्वर निवास करता है, वह आत्मा है जिसे परमेश्वर ने वादा किया था कि वह यहजेकेल 36, योएल 2 और यशायाह 44 की पूर्ति में उंडेलेगा, और अब यह परमेश्वर की आत्मा के माध्यम से उसके लोगों के बीच है कि परमेश्वर का निवासस्थान, उसकी मंदिर उपस्थिति और वास्तव में उसकी अदन पवित्र उपस्थिति अब उसके लोगों में निवास करती है। तथ्य यह है कि वे बनाए जा रहे हैं, श्लोक 21 पर ध्यान दें, उसमें, पूरी इमारत एक साथ जुड़ जाती है और प्रभु में एक पवित्र मंदिर बनने के लिए उठती है।

और उसमें, आप भी, एक साथ मिलकर एक निवास स्थान बनने के लिए बनाए जा रहे हैं जहाँ परमेश्वर अपनी आत्मा के द्वारा रहता है। तो, आपको यह चित्र मिलता है कि मंदिर निर्माण की प्रक्रिया में है और अभी तक पूरा नहीं हुआ है। लेकिन पूरी बात यह है कि अब यीशु मसीह के आने के साथ, यहूदी और गैर-यहूदी, विशेष रूप से गैर-यहूदी जो अलग थे, जो इज़राइल और नागरिकता और उनके वादों से अलग हो गए थे, अब यीशु मसीह के माध्यम से यशायाह की

प्रतिज्ञा की गई बहाली जिसने एक नई सृष्टि में शांति और मेल-मिलाप लाने का वादा किया था, अब यीशु मसीह के व्यक्तित्व में पूरी हो गई है।

और अब निर्वासन से उस पुनर्स्थापना का लक्ष्य, सृष्टि में परमेश्वर के इरादे से लंबे समय से प्रतीक्षित लक्ष्य और तम्बू और मंदिर में जहाँ परमेश्वर अपने छुड़ाए हुए पुनर्स्थापित लोगों के बीच निवास करेगा, अब मसीह में पूरा हो रहा है जहाँ परमेश्वर अपने मंदिर के लोगों के बीच अपनी नई वाचा की आत्मा के माध्यम से निवास करता है। अगला पाठ जिसे मैं देखना चाहता हूँ और उससे इसे जोड़ना चाहता हूँ वह प्रकाशितवाक्य 21 और 22 होगा। मुझे लगता है कि इफिसियों 2 यशायाह की प्रतिज्ञाओं और परमेश्वर के मंदिर निवास का उद्घाटन रूप है, जिसमें हमने देखा कि मंदिर का निर्माण होने की प्रक्रिया में था, और इसमें शामिल होने वाले व्यक्तिगत सदस्यों ने मंदिर का निर्माण किया।

मुझे लगता है कि हम प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में उस प्रक्रिया की पूर्णता पा सकते हैं। यहाँ प्रकाशितवाक्य की पुस्तक का चरमोत्कर्ष, नए नियम के बाइबिल धर्मशास्त्र का चरमोत्कर्ष और संपूर्ण बाइबिल का चरमोत्कर्ष है। और मैं इस पाठ को बाइबिल के धर्मशास्त्रीय दृष्टिकोण से जाँचने में जो करना चाहता हूँ, वह यह है कि मैं इसे नवीनता के विषय के इर्द-गिर्द व्यवस्थित करना चाहता हूँ।

यह रहस्योद्घाटन 21 है, जिसकी शुरुआत यह कहकर होती है, और मैंने एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी देखी। इसलिए, मैं रहस्योद्घाटन 21 और 22 की हमारी संक्षिप्त चर्चा को नवीनता के विषय के इर्द-गिर्द व्यवस्थित करना चाहता हूँ। तो सबसे पहले रहस्योद्घाटन 21 और 22 में हम एक नई सृष्टि और एक नया अदन पाते हैं।

21.1 यूहन्ना कहता है कि तब मैंने एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी देखी क्योंकि पहला स्वर्ग चला गया था, और फिर कुछ नहीं था। यह यशायाह अध्याय 65 का स्पष्ट संकेत है, जहाँ भविष्यवक्ता एक नई सृष्टि की आशा करता है, और परमेश्वर कहता है कि मैं एक नया स्वर्ग और एक नई पृथ्वी बनाने वाला हूँ। अब यूहन्ना इसे प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के नए स्वर्ग और नई पृथ्वी में पूरा होता देखता है।

लेकिन यशायाह 65 और 21.1 में यूहन्ना के शब्द अंततः प्रकाशितवाक्य, उत्पत्ति 1 में सृष्टि के विवरण पर वापस जाते हैं, जहाँ हम पढ़ते हैं कि शुरुआत में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की रचना की। लेकिन अध्याय 3 में पाप के कारण वह बर्बाद और भ्रष्ट हो गया। और अब हम यशायाह 65 में परमेश्वर के इरादे को एक नए आकाश और एक नई पृथ्वी में अपनी सृष्टि को पुनर्स्थापित करने के लिए पाते हैं। अब, हम देखते हैं कि यूहन्ना उन वादों की पूर्णता के अपने दर्शन के साथ इसे आगे बढ़ाता है।

यूहन्ना ने एक नया आकाश और एक नई पृथ्वी देखी। अध्याय 22 और आयत 1 और 2 में, हम ईडन के बगीचे से स्पष्ट संबंध पाते हैं, जहाँ यूहन्ना जीवन के जल की एक नदी को परमेश्वर और मेमे के सिंहासन से बहते हुए देखता है। और नदी के दोनों किनारों पर उत्पत्ति अध्याय 2 में ईडन के बगीचे से जीवन का वृक्ष खड़ा था। यूहन्ना यहाँ यहजेकेल 47 का भी उल्लेख कर रहा है, जो

स्वयं ईडन के बगीचे में उत्पत्ति में वापस जाता है, जहाँ यह जकेल मंदिर से जीवन की एक नदी को बहते हुए देखता है।

अब, जॉन ने इसे सिंहासन से बहते हुए देखा है। हम थोड़ी देर में देखेंगे कि क्यों। लेकिन वह मंदिर से एक नदी बहते हुए देखता है और उसके दोनों ओर फलों के पेड़ लगे हुए हैं।

अब, जॉन उसी से प्रेरणा लेता है। लेकिन जॉन न केवल यह जकेल के पास जाता है, बल्कि वापस अदन के बगीचे में जाता है और जीवन के वृक्ष की उस भाषा में प्रेरणा लेता है। जीवन का एक ही वृक्ष।

इसलिए, यूहन्ना सृष्टि के अंतिम लक्ष्य और एक नई सृष्टि की भविष्यवाणियों को देखता है जो अब एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी में अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच रही है। वह अपने अंतिम दर्शन में एक नया अदन का बगीचा देखता है। तो, एक नई सृष्टि, एक नया अदन।

हम एक नया यरूशलेम भी पाते हैं। प्रकाशितवाक्य के अध्याय 21 और पद 2 में यूहन्ना कहता है, "और मैंने पवित्र नगर, नये यरूशलेम को स्वर्ग से परमेश्वर के पास से उतरते देखा, जो दुल्हन के समान सजी हुई थी, और अपने पति के लिए सुन्दर ढंग से सजी हुई थी।"

एक बार फिर, यदि आप यशायाह के अध्याय 65 पर वापस जाएँ, तो यशायाह की भविष्यवाणी में एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी की प्रत्याशा के बाद, आप आगे पढ़ेंगे और वह कहता है, "परन्तु जो मैं रचूँगा, उसमें आनन्दित और सदा सर्वदा आनन्दित रहो, क्योंकि मैं यरूशलेम को अपना आनन्द और उस प्रजा को आनन्दित करने के लिये रचूँगा। मैं यरूशलेम के कारण आनन्दित होऊँगा और अपनी प्रजा से प्रसन्न होऊँगा।"

उसमें रोने-धोने की आवाज़ फिर कभी नहीं सुनाई देगी। इसलिए अब यूहन्ना भी यशायाह 65 की पूर्ति में एक नया यरूशलेम देखता है। लेकिन स्पष्ट रूप से नया यरूशलेम लोगों के साथ पहचाना जाता है।

मुझे लगता है कि अगर आप प्रकाशितवाक्य 21 को ध्यान से पढ़ें, तो तकनीकी रूप से नया यरूशलेम किसी भौतिक शहर को संदर्भित नहीं करता है। इसका मतलब यह नहीं है कि यूहन्ना को नहीं लगता कि कोई भौतिक शहर या शहर होंगे। यह सिर्फ़ इतना है कि जिस तरह से हम नए नियम के बाकी हिस्सों में इमारतों की कल्पना का इस्तेमाल पाते हैं, उसी तरह यूहन्ना इमारतों की कल्पना लेता है और अब इसे लोगों पर लागू करता है।

तो, नया यरूशलेम लोगों के लिए एक रूपक है। ऐसा कहने का कारण यह है कि इसे दुल्हन के बराबर माना जाता है। नया यरूशलेम दुल्हन है जिसे यूहन्ना ने प्रकाशितवाक्य 19-21 में स्पष्ट किया है कि दुल्हन लोग हैं।

लोग स्वयं मसीह की दुल्हन हैं। यदि आप इफिसियों के अध्याय 5 में वापस जाते हैं, तो हम पाते हैं कि मसीह की दुल्हन कलीसिया है, अर्थात् लोग स्वयं। इसलिए नया यरूशलेम अपनी पूर्णता

पाता है, यशायाह 65 का नया यरूशलेम नवीनीकृत पुनर्स्थापित यरूशलेम में अपनी पूर्णता पाता है, लोग स्वयं एक नई सृष्टि में हैं।

तो, एक नई सृष्टि और अदन, एक नया यरूशलेम, एक नई वाचा, एक नई वाचा है। दो जगहें हैं जहाँ मुझे लगता है कि हम इस पर जोर देते हैं। नंबर एक, मैंने इसके तहत दुल्हन और विवाह की छवि को शामिल करना चुना है क्योंकि पुराने नियम में, मुझे लगता है कि बोस्टन, मैसाचुसेट्स में एक पुराने नियम के प्रोफेसर, विद्वान और पादरी गॉर्डन ह्यूजेनबर्गर ने विवाह और वाचा पर एक किताब लिखी है जो पुराने नियम में विवाह और वाचा के बीच के संबंध को प्रदर्शित करती है।

मुझे लगता है कि आपको यहाँ प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 में भी यही संबंध देखने को मिलता है जहाँ विवाह को अब परमेश्वर और उसके लोगों के बीच नई वाचा के रिश्ते की पूर्णता और पूर्णता के हिस्से के रूप में देखा जाता है। इसलिए, वाचा के संदर्भ में, हम पाते हैं कि विवाह अब पूरा हो गया है। दुल्हन अपनी सारी भव्यता और महिमा के साथ अब परमेश्वर और मेरे के सामने पूर्ण रूप से प्रस्तुत की जाती है।

विवाह अब पूर्ण हो चुका है और पुराने नियम में परमेश्वर के अपने लोगों के साथ सम्बन्ध की पूर्ति है। पुराने नियम और परमेश्वर के अपने लोगों के साथ सम्बन्ध पर वापस जाएँ, जो अक्सर बहुत ही उथल-पुथल भरा और परेशानी भरा होता है जहाँ इस्राएल भटकता रहता है और व्यभिचारिणी की भूमिका निभाता है। लेकिन पुराने नियम में परमेश्वर और उसके लोगों के सम्बन्ध को दुल्हन के रूप में, पति और पत्नी के रूप में चित्रित किया गया है, और फिर इफिसियों 5 में जहाँ मसीह और कलीसिया के बीच सम्बन्ध, पुराने नियम की पूर्ति में, उसी तरह पति और पत्नी के बीच सम्बन्ध के रूप में चित्रित किया गया है, अब नई सृष्टि में परमेश्वर के अपने लोगों के साथ सम्बन्ध में अपनी पूर्णता तक पहुँचता है।

इसलिए, एक अर्थ में, कोई यह कह सकता है कि नए नियम के बाकी हिस्सों में पाई जाने वाली सगाई की लंबी अवधि अब समाप्त हो गई है, और दुल्हन को इफिसियों 5 में जो हम देखते हैं, उसकी पूर्ति में प्रस्तुत किया गया है, कि मसीह का इरादा उसे अपने सामने निर्दोष प्रस्तुत करना था। अब, मसीह की दुल्हन को प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 में विवाह की अंतिम परिणति में निर्दोष और परिपूर्ण और पवित्र के रूप में प्रस्तुत किया गया है। और शायद कम से कम एक स्तर पर हमें प्रकाशितवाक्य 21 में इस अनमोल रत्न भाषा को कैसे समझना चाहिए।

तथ्य यह है कि सभी नींव एक कीमती रत्न से बनी हैं, तथ्य यह है कि यह क्रिस्टल की तरह चमकता है और एक कीमती रत्न है, यह सब बताता है कि अब दुल्हन अपने सभी वैभव में सजी हुई है और अंतिम विवाह में पूर्ण और परिपूर्ण है, पुराने नियम की पूर्ति में भगवान और उनके लोगों के बीच विवाह संबंध की परिणति और इफिसियों 5 में जो हम पाते हैं उसकी पूर्ति भी है, जहाँ अब मसीह और उनकी कलीसिया पति और पत्नी हैं। लेकिन नई वाचा भी अध्याय 21 और पद 3 में नई वाचा के सूत्र में अपनी पूर्णता पाती है, जहाँ यूहन्ना दर्शन से श्रवण की ओर जाता है, अर्थात्, श्रवण, जो वह सुनता है, और जो आवाज़ वह सुनता है वह जो उसने देखा है उसकी व्याख्या करेगी। इसलिए, यूहन्ना कहता है, और मैंने सिंहासन से एक ऊँची आवाज़ सुनी, यह रहस्योद्घाटन का 21:3 है। देखो या निहारना, परमेश्वर का निवास स्थान अब उसके लोगों के

बीच है, और वह उनके साथ रहेगा। वे उसके लोग होंगे, और परमेश्वर स्वयं उनके साथ रहेगा, उनका परमेश्वर।

यह वाचा सूत्र का मूर्त रूप है, अंतिम मूर्त रूप है। यहाँ, यूहन्ना स्पष्ट रूप से यहजेकेल 37, शायद लैव्यव्यवस्था 26 का भी हवाला दे रहा है, दोनों ही वाचा सूत्र के पुनरावृत्ति हैं, लेकिन शायद वाचा सूत्र के अन्य उल्लेख भी हैं, जिसका मूल यह है कि, मैं उनका परमेश्वर होऊँगा, और वे मेरे लोग होंगे ताकि हम परमेश्वर के अपने लोगों के साथ वाचा संबंध में रहने के इरादे की अंतिम पूर्ति पा सकें।

अब, वाचा के सूत्र को एक बार फिर दोहराते हुए, एक नई सृष्टि में, उद्धार के इतिहास का अंतिम लक्ष्य परमेश्वर द्वारा अपने लोगों के साथ वाचा के रिश्ते में निवास करने के साथ प्राप्त किया जाता है। अब, वह उनका परमेश्वर है, और वे उसके लोग हैं। इसलिए नई सृष्टि, नया अदन, नया यरूशलेम और फिर पुराने नियम के पाठ की पूर्ति में नई वाचा और साथ ही नया मंदिर।

हम पाते हैं कि मंदिर और निवासस्थान का अंतिम लक्ष्य अंततः नए यरूशलेम में पूरा हुआ। अब, बेशक, इन सभी विषयों को अलग करना लगभग असंभव है। जैसा कि हमने वाचा के रिश्ते के पूरे लक्ष्य को देखा, मैं उनका परमेश्वर होऊँगा और वे मेरे लोग होंगे, यह है कि परमेश्वर उनके बीच में वास करेगा।

फिर से, 21:3 में वाचा सूत्र को पढ़ें, देखिए परमेश्वर का निवास स्थान, उसका तम्बू, उसका मंदिर अब उसके लोगों के बीच है और वह उनके साथ रहेगा। यह केवल निवास करने की भाषा नहीं है, बल्कि यह तम्बू की उपस्थिति, तम्बू की उपस्थिति, या उसके लोगों के साथ मंदिर में रहने की भाषा है। इसलिए तम्बू, मंदिर का अंतिम लक्ष्य अब नई वाचा के रिश्ते में पहुँच गया है, परमेश्वर और उसके लोगों के बीच पूर्ण रूप से पूर्ण नई वाचा का रिश्ता।

अब, मंदिर जिस ओर इशारा कर रहा था, वह अब परमेश्वर के अपने लोगों के साथ रहने से साकार हो गया है। हम देखेंगे कि निर्गमन के साथ भी संबंध हैं, लेकिन ईडन गार्डन के साथ स्पष्ट संबंध हैं। मंदिर के बारे में हमारी चर्चा में, हमने देखा कि ईडन गार्डन परमेश्वर का मूल अभयारण्य और मंदिर था।

यह वह जगह है जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहता था। बाद में पुराने नियम में, तम्बू और मंदिर का उद्देश्य परमेश्वर के मूल पवित्रस्थान को याद करना था। तम्बू और मंदिर, एक तरह से, अदन का लघु उद्यान थे क्योंकि परमेश्वर ने अपने लोगों के साथ उनके पवित्रस्थान में रहने के अपने इरादे को फिर से स्थापित करना शुरू किया।

अब हम देखते हैं कि जॉन इस मंदिर की भाषा को अपना रहा है, लेकिन जो हम पहले ही देख चुके हैं वह यह है कि जॉन के लिए, जो बात अनोखी है वह यह है कि नई सृष्टि में, जॉन के दर्शन में, कोई अलग भौतिक मंदिर नहीं है। जॉन कहते हैं कि मैंने शहर में एक मंदिर नहीं देखा क्योंकि सर्वशक्तिमान प्रभु परमेश्वर और मेम्ना ही इसका मंदिर हैं। दूसरे शब्दों में, मंदिर का लक्ष्य,

जिसकी मंदिर को उम्मीद थी, यानी, जो ईडन के बगीचे में परमेश्वर के अपने लोगों के बीच सीधे रहने की सच्चाई थी, अब साकार हो गई है।

अब जबकि नई सृष्टि आ चुकी है, अब जबकि पुरानी सृष्टि पाप, दुःख और मृत्यु से ग्रस्त है, जिसके लिए पहले मंदिर की आवश्यकता थी, अब जबकि उसे हटा दिया गया है, अध्याय 21, पद 1, परमेश्वर एक अलग भौतिक मंदिर की आवश्यकता के बिना सीधे अपने लोगों के साथ रह सकता है। इसलिए, यूहन्ना कहता है, परमेश्वर और मेमना ही मंदिर हैं। मंदिर जिस ओर इशारा कर रहा था, वह अब साकार हो चुका है।

अब अदन की वाटिका का नवीनीकरण हो चुका है। और अध्याय 22, श्लोक 1 और 2 में फिर से गौर करें, हमें अदन की वाटिका की स्पष्ट छवि मिलती है। नया यरूशलेम दर्शन, प्रकाशितवाक्य 21 और 22 का नया सृजन दर्शन, एक पुनर्स्थापित अदन की वाटिका है।

जैसे ही मैंने अपनी NIV पर नज़र डाली, मैंने देखा कि इसके ऊपर शीर्षक है ईडन रिस्टोर्ड। लेकिन फिर से, ईडन मूल मंदिर था, मूल अभयारण्य जहाँ परमेश्वर निवास करता था। इसके अलावा, जॉन द्वारा उद्धृत अन्य पाठ, यहजकेल 47, ईडन गार्डन और मंदिर दोनों के संदर्भ में है।

इसलिए, यहजकेल ने खुद मंदिर और ईडन भाषा को मिलाया। अब जॉन भी ऐसा ही करता है, यहजकेल 47 का हवाला देते हुए, लेकिन साथ ही आयत 2 में जीवन के वृक्ष की छवि पर वापस जाता है जिसे हमने उत्पत्ति 2 से देखा था। इसलिए, नया मंदिर, परमेश्वर के लोगों के बारे में जॉन का दर्शन एक नए मंदिर के रूप में देखा जाना चाहिए। लेकिन जॉन जो करता है, हालाँकि वह कहता है, मैंने कोई मंदिर नहीं देखा, क्योंकि परमेश्वर और मेमना ही मंदिर हैं, दिलचस्प बात यह है कि, पॉल जैसे अन्य नए नियम के ग्रंथों में जो हमने पाया है, उसके अनुरूप, मंदिर की भाषा अब पूरे नए यरूशलेम के लोगों पर लागू होती है।

यूहन्ना ने यहजकेल 40-48 से कल्पना ली है, जो मंदिर को मापने का यहजकेल का दर्शन है, और अब वह इसे यरूशलेम की रचना में कहीं भी भौतिक रूप से अलग मंदिर पर लागू नहीं करता है, बल्कि अब वह इसे पूरे नए यरूशलेम और पूरे लोगों पर लागू करता है। तो, जो मापा जाता है वह नया यरूशलेम है, कोई अलग मंदिर नहीं। जहाँ पानी मंदिर से नहीं बल्कि नए यरूशलेम के बीच में, नई रचना के बीच में परमेश्वर के सिंहासन से निकलता है।

इसके अलावा, नया यरूशलेम एक घन के आकार का है, जो 1 राजा 5-7 में परम पवित्र स्थान का आकार था। पूरा शहर सोने से मढ़ा हुआ है, और, जब आप पुराने नियम में तम्बू और मंदिर के वृत्तांत पढ़ते हैं, तो सब कुछ सोने से मढ़ा हुआ था; अब, पूरा शहर सोने से मढ़ा हुआ है। हमने यह भी देखा कि सोने ने उत्पत्ति 2 में मूल ईडन गार्डन के परिवेश में कीमती धातुओं में से एक के रूप में भूमिका निभाई थी।

तो अब, अध्याय 21 में यह कहकर कि पूरा शहर सोने से बना है, लेखक स्पष्ट रूप से इसे पुराने नियम के तम्बू और मंदिर से जोड़ रहा है। यह कहने का एक और तरीका है कि परमेश्वर के लोग

स्वयं तम्बू हैं, परमेश्वर का मंदिर निवास। मुझे लगता है कि यहाँ हम इफिसियों 2 आयत 20-22 में पौलुस द्वारा वर्णित की गई पूर्णता को पाते हैं।

परमेश्वर का पूरा मंदिर बनाया जा रहा है, और व्यक्तिगत सदस्यों को अब एक पवित्र निवास में बनाया जा रहा है जहाँ परमेश्वर आत्मा के साथ निवास करता है। अब हम प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 के नए निर्माण में अंतिम, परम युगांतकारी मंदिर में उस प्रक्रिया की परिणति देखते हैं। इसे और अधिक पुष्ट करने के लिए, मंदिर की भाषा और इस दर्शन के संदर्भ को प्रदर्शित करें, उदाहरण के लिए, अध्याय 21, श्लोक 19-20 में, 12 पत्थरों की सूची, 19-20 में 12 कीमती पत्थर वास्तव में पुराने नियम में महायाजक की छाती पर लगे पत्थरों का स्पष्ट संकेत है।

उदाहरण के लिए, निर्गमन अध्याय 28. अध्याय 22, 23 और 24 में भी हम लोगों को याजकों के रूप में कार्य करते हुए पाते हैं. अतः यह कहता है, अब कोई श्राप नहीं होगा.

परमेश्वर और मेमे का सिंहासन नगर में होगा, और उसके सेवक उसकी सेवा करेंगे, और वे उसका चेहरा और उसका नाम देखेंगे, जो आराधना का लक्ष्य है, और उसका नाम उनके माथे पर होगा जैसे कि याजक अपने माथे पर परमेश्वर का नाम रखते हैं। फिर कभी रात नहीं होगी। उन्हें मंदिर में दीपक की रोशनी की आवश्यकता नहीं होगी क्योंकि परमेश्वर स्वयं, परमेश्वर की महिमामय उपस्थिति, पूरे नए यरूशलेम की नई सृष्टि का प्रकाश होगी।

इसलिए, मंदिर में पाए जाने वाले दीपक की तरह किसी दीपक की आवश्यकता नहीं है। इसलिए, नए यरूशलेम में, प्रकाशितवाक्य के अध्याय 21 में यूहन्ना का दर्शन पूर्णता है, अपने लोगों के साथ रहने के परमेश्वर के इरादे की अंतिम पूर्ति। पवित्र उद्यान के साथ उसका मूल इरादा, तम्बू और मंदिर के साथ बहाल होने की उसकी मंशा, और बहाल मंदिर की भविष्यवाणी की प्रत्याशा अब प्रकाशितवाक्य 21 के नए मंदिर में अपनी पूर्ति पाती है, जो एक अलग मंदिर संरचना की आवश्यकता के बिना होता है, इसके बजाय पूरी सृष्टि अब परमेश्वर की जीवन देने वाली उपस्थिति से भरी हुई जगह है, परमेश्वर का निवास तम्बू मंदिर है, जो पूरे लोगों और पूरी सृष्टि के साथ सह-व्यापक है।

तो अब, परमेश्वर की उपस्थिति अब किसी महायाजक तक सीमित नहीं है जो किसी विशिष्ट स्थान, परम पवित्र स्थान में प्रवेश करता है। अब, परमेश्वर के सभी लोग याजकों के रूप में कार्य करते हैं, और उन सभी को नई सृष्टि में परमेश्वर तक समान पहुँच प्राप्त है। पाँचवीं महत्वपूर्ण बात जो नई है वह यह है कि नए लोग हैं। और इसलिए, हम प्रकाशितवाक्य 21 में पाते हैं कि परमेश्वर के नए लोग हैं जिनमें यहूदी और अन्यजाति शामिल हैं जो एक नई सृष्टि में रहते हैं।

अध्याय 21 में और पद 12 की शुरुआत में, यूहन्ना नए यरूशलेम का वर्णन करता है, और फिर से, मैं चाहता हूँ कि आप हमेशा ध्यान रखें कि नया यरूशलेम लोगों का प्रतीक है। तो, नए यरूशलेम में एक बड़ी और ऊँची दीवार थी, नए यरूशलेम के लोग, 12 द्वारों वाली एक बड़ी और ऊँची दीवार, और द्वारों पर 12 स्वर्गदूतों के साथ, द्वारों पर इस्राएल के 12 गोत्रों के नाम लिखे हुए थे। तो, 12 द्वार इस्राएल राष्ट्र, 12 गोत्रों का प्रतीक हैं।

पूर्व में तीन द्वार थे, उत्तर में तीन, दक्षिण में तीन और पश्चिम में तीन, हालाँकि यूहन्ना हमें यह नहीं बताता कि कौन सी जनजातियाँ द्वारों की किस दिशा में जाती हैं। फिर वह कहता है कि शहर की दीवार में 12 नींव थीं, और उन पर मेमने के 12 प्रेरितों के नाम थे। तो आप देखिए, यूहन्ना ने जो किया है वह यह है कि अब नए लोग परमेश्वर के लोगों, इस्राएल और उसके नए लोगों, चर्च दोनों से मिलकर बने हैं, जो प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर बने हैं।

और इसलिए, यह दिलचस्प है कि प्रेरितों ने, जो इफिसियों अध्याय 2 में दिलचस्प था, प्रेरितों और भविष्यद्वक्ताओं की नींव पर मंदिर का निर्माण किया। एक बार फिर, हम इसकी पूर्णता देखते हैं, जहाँ पूरी संरचना मेमने के 12 प्रेरितों की नींव पर बनाई गई है। तो एक बार फिर, अपने लोगों के साथ व्यवहार करने का परमेश्वर का इतिहास, लोगों को बनाने का परमेश्वर का इरादा, अब राष्ट्रीय इस्राएल में नहीं बल्कि यहूदी और गैर-यहूदी दोनों से मिलकर परमेश्वर के सार्वभौमिक लोगों में पूर्णता पाता है, जिसका संकेत इस्राएल के 12 गोत्रों और मेमने के 12 प्रेरितों द्वारा दिया जाता है।

अब, हम परमेश्वर के एक लोगों की पूर्णता पाते हैं। इसलिए, परमेश्वर द्वारा यहूदी और गैरयहूदी से एक नई मानवता बनाने के संदर्भ में परमेश्वर के लोगों की पुनर्स्थापना के पौलुस के दर्शन को एक बार फिर से अपनी अंतिम पूर्णता मिलती है, प्रकाशितवाक्य अध्याय 21 में यूहन्ना के दर्शन में इसकी अंतिम पूर्णता मिलती है। हम यहाँ एक नया पलायन भी देखते हैं।

यही निर्गमन की पुस्तक में परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाने के लिए किए गए पलायन का लक्ष्य है, और यशायाह जैसे भविष्यवक्ताओं द्वारा प्रत्याशित नया पलायन अब अपने अंतिम लक्ष्य तक पहुँच गया है। परमेश्वर द्वारा अपने लोगों को मिस्र से छुड़ाने का अंतिम लक्ष्य उन्हें उनकी भूमि में वापस लाना था, जहाँ परमेश्वर उनके बीच अपना निवास और निवास स्थापित करेगा। परमेश्वर द्वारा उन्हें पुनर्स्थापित करने का कारण यह है कि एक बार जब परमेश्वर के लोग इस्राएल निर्वासन में चले गए, तो पुराने नियम के भविष्यवक्ताओं, विशेष रूप से यशायाह, ने निर्वासन से एक पुनर्निर्मित मंदिर के साथ भूमि पर बहाली की आशा की, परमेश्वर उनके बीच एक नए पलायन के रूप में निवास कर रहा था।

और इसलिए, हम यहाँ प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में भी ठीक यही बात घटित होते हुए, ठीक यही हलचल पाते हैं। परमेश्वर अपने लोगों को पहले पाठकों, रोमन साम्राज्य के लिए पाप की दुनिया की गुलामी और बंधन से मुक्त करता है। अब वह उन्हें उनकी भूमि, एक नई सृष्टि में वापस लाता है, और उनके बीच अपने मंदिर की उपस्थिति स्थापित करता है।

सबसे पहले पलायन का पूरा लक्ष्य। तो, हम यहाँ पलायन का लक्ष्य और भविष्यवक्ताओं द्वारा वादा किए गए एक नए पलायन की पूर्ति पाते हैं, जो अब अपनी पूर्णता तक पहुँच रहे हैं। मुझे लगता है कि मैंने आपको पहले सुझाव दिया था कि हमें शायद पलायन के मूल भाव के हिस्से के रूप में पद 1 में समुद्र के न होने के बारे में जॉन के संदर्भ को पढ़ना चाहिए।

समुद्र, जैसा कि ज्यादातर टिप्पणियाँ आपको बताएँगी, समुद्र अराजकता और बुराई का प्रतीक था, जो परमेश्वर और उसके लोगों के प्रति शत्रुतापूर्ण था, जो खतरा था। यह जानवर का घर है। समुद्र को अक्सर राक्षसी जानवर के घर के रूप में देखा जाता था।

प्रकाशितवाक्य में पहले, आप अध्याय 13 में जानवर को समुद्र से बाहर आते हुए पाते हैं ताकि वह परमेश्वर के लोगों को सताए, परमेश्वर और उसके लोगों का विरोध करने के लिए परमेश्वर के उद्देश्यों को विफल करने का प्रयास करे। और अब वह समुद्र हटा दिया गया है। दिलचस्प बात यह है कि यशायाह अध्याय 51 में, हमने कहा कि यशायाह उन ग्रंथों में से एक है, जो किसी भी अन्य से अधिक, भविष्य में अपने लोगों के लिए परमेश्वर के उद्धार को एक नए पलायन के रूप में दर्शाता है।

अध्याय 51 में, और यहाँ श्लोक 9 है, उस नए पलायन का वर्णन करते हुए, यशायाह कहता है, "जागो, जागो, हे प्रभु की भुजा, अपने आप को शक्ति से सुसज्जित करो।" यह भाषा निर्गमन की पुस्तक से है। जैसे बीते दिनों में जागो, जैसे पुरानी पीढ़ियों में जागो।

यही पलायन है। क्या यह आप ही नहीं थे जिन्होंने राहाब को टुकड़े-टुकड़े कर दिया, जिसने उस राक्षस को छेद दिया? तो, वहाँ आपका ड्रैगन है; वहाँ आपका जानवर है, और वहाँ आपका ड्रैगन जानवर-प्रकार का व्यक्ति है जो परमेश्वर के लोगों का विरोध करता है। क्या यह आप ही नहीं थे जिन्होंने समुद्र को, महान गहरे पानी को सुखा दिया, जिसने समुद्र की गहराई में एक रास्ता बनाया ताकि छुड़ाए गए लोग पार कर सकें? इसलिए दिलचस्प बात यह है कि ध्यान दें कि यशायाह 51 में लाल सागर राहाब से जुड़ा हुआ है।

यानी, भगवान ने राक्षस राहाब को कब हराया? उसने समुद्री राक्षस को कब छेदा? जब उसने समुद्र को विभाजित किया। जैसा कि मैंने पहले कहा था, दिलचस्प बात यह है कि तरगुम, अरामी अनुवाद, यशायाह 51:9 का तरगुम, वास्तव में राहाब और राक्षस को फिरौन के बराबर बताता है। इसलिए, यशायाह 51:9 में लाल सागर के विभाजन को बुराई की हार के रूप में, समुद्र में रहने वाली अराजकता और बुराई की शक्तियों की हार के रूप में माना जाता है।

अब मुझे लगता है कि प्रकाशितवाक्य 21:1 में क्या हो रहा है, जब यूहन्ना कहता है कि समुद्र अब नहीं रहा, तो यह युगांतिक लाल सागर है जो लोगों को उनकी विरासत का आनंद लेने में बाधा बन गया था जो परमेश्वर के लोगों के लिए शत्रुतापूर्ण था, बुराई और अराजकता का प्रतीक था, समुद्री राक्षस का घर, जो परमेश्वर के लोगों का विरोध करता है, जो शत्रुतापूर्ण है और उन्हें धमकाता है, जो दर्द और मृत्यु और पीड़ा का कारण बनता है, अब इसे हटा दिया गया है और सुखा दिया गया है ताकि लोग पार कर सकें और अपनी विरासत में प्रवेश कर सकें, जो कि नई रचना है, भूमि, जिसमें अब परमेश्वर उनके बीच निवास कर रहा है, जो पहले स्थान पर निर्गमन का लक्ष्य था। तो, एक नई रचना, एक नया अदन जहाँ परमेश्वर अपने लोगों के साथ रहस्योद्घाटन की पूर्ति में एक नई रचना में निवास करता है, मुझे खेद है, उत्पत्ति अध्याय 1 और यशायाह 65 में भविष्यवाणी की अपेक्षाएँ। एक नया यरूशलेम, फिर से यशायाह 65 की पूर्ति में, जहाँ अब नए यरूशलेम की पहचान लोगों के साथ की जाती है।

विवाह की पूर्णता और यहजकेल 37 के साथ वाचा की पूर्ति के साथ एक नई वाचा। हम पाते हैं कि नई वाचा अपने चरमोत्कर्ष पर पहुँच रही है। एक नया मंदिर।

परमेश्वर अब अपने लोगों के साथ रहता है। अदन के बगीचे में उसका मूल इरादा और एक तम्बू और मंदिर की स्थापना अब परमेश्वर के अपने लोगों के बीच रहने के साथ अपनी पूर्णता पाती है ताकि पूरा नया यरूशलेम, पूरे लोग, एक मंदिर, परम पवित्र स्थान बन जाएँ, जहाँ परमेश्वर रहता है, और वे सभी पुजारी हैं जो परमेश्वर की आराधना और सेवा करते हैं। एक नया लोग।

यहूदी और गैर-यहूदी अब परमेश्वर के नए लोगों के रूप में, नई सृष्टि में परमेश्वर के पूर्ण सिद्ध लोगों के रूप में एक साथ लाए गए हैं। और फिर परमेश्वर ने इसे एक नए पलायन में पूरा किया है। पहले पलायन का लक्ष्य, एक नए पलायन की भविष्यवक्ता की प्रत्याशा का लक्ष्य, परमेश्वर द्वारा अराजकता और बुराई और शत्रुता के युगांतिक लाल सागर को सुखाकर प्राप्त किया जाता है ताकि लोग अब पार कर सकें और भूमि, नई सृष्टि को प्राप्त कर सकें, जहाँ परमेश्वर अब उनके बीच एक तम्बू मंदिर में निवास करता है जो परमेश्वर के सभी लोगों के साथ सह-विस्तृत है।

और फिर, अंत में, एक नया शासन और एक नया नियम होगा। प्रकाशितवाक्य का अध्याय 22 और श्लोक 5। अब रात नहीं होगी।

उन्हें दीपक की रोशनी या सूरज की रोशनी की ज़रूरत नहीं होगी, क्योंकि प्रभु परमेश्वर उन्हें रोशनी देगा, और वे हमेशा-हमेशा के लिए राज करेंगे। यदि आप सहस्राब्दी मार्ग में अध्याय 20 पर वापस जाते हैं, तो यह कहता है कि परमेश्वर के लोगों को उठाया गया था, और उन्होंने एक हज़ार साल तक मसीह के साथ राज किया। यह केवल उस चीज़ की तैयारी है जिसे हम प्रकाशितवाक्य 22 और श्लोक 5 में पढ़ते हैं। अब, वे हमेशा-हमेशा के लिए राजाओं के रूप में राज करते हैं।

लेकिन मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि आदम और हव्वा को पहली सृष्टि में परमेश्वर के स्वरूप में यही करना था। फिर भी, पाप के कारण वे ऐसा करने में असफल रहे। उन्हें पूरी धरती पर राज करना था।

उन्हें परमेश्वर के स्वरूप और प्रतिनिधि के रूप में फैलना था। उन्हें परमेश्वर के शासन और शासन तथा उपस्थिति को पूरी पृथ्वी पर फैलाना था। और अब हम पाते हैं कि मानवता ऐसा कर रही है और पृथ्वी पर शासन करके इसे पूरा कर रही है।

यह प्रकाशितवाक्य के अध्याय 22 में नई सृष्टि के ऊपर है। इसलिए, वे मानवता के लिए परमेश्वर के मूल इरादे की पूर्ति में हमेशा-हमेशा के लिए शासन करेंगे। लेकिन इसे संभवतः इस्राएल के माध्यम से परमेश्वर द्वारा अपने उद्देश्यों को पूरा करने के संदर्भ में भी देखा जाना चाहिए।

यदि आपको याद हो कि आदम और हव्वा के लिए अपने उद्देश्यों को पूरा करने में वे सारी सृष्टि पर शासन करेंगे और सारी सृष्टि पर शासन करेंगे। परमेश्वर ने इस्राएल को याजकों का राज्य होने के लिए चुना, लेकिन अधिक विशेष रूप से, उसने दाऊद को चुना। उसने राजतंत्र की स्थापना की और दाऊद को, विशेष रूप से राजा के रूप में, जिसके माध्यम से इस्राएल और अंततः सारी मानवता के लिए सारी सृष्टि पर शासन करने का परमेश्वर का इरादा पूरा होगा।

और आपको भजन संहिता अध्याय 2 और अन्य स्थानों में कुछ भजन याद होंगे जहाँ पृथ्वी के छोर दाऊद के बेटे को उसके अधिकार के रूप में दिए जाएँगे। अब हम पाते हैं कि यह परमेश्वर के लोगों द्वारा पूरी पृथ्वी पर शासन करने के साथ पूरा हुआ है जो कि नई सृष्टि है। दिलचस्प बात यह है कि हमें अध्याय 21 और श्लोक 7 में दाऊद की वाचा का संदर्भ मिलता है। जो विजयी होंगे वे यह सब प्राप्त करेंगे।

क्या-क्या? नई सृष्टि जिसका वर्णन यूहन्ना ने 21 में किया है। एक और उसके बाद। वे इसका वारिस होंगे, और मैं उनका परमेश्वर होऊंगा, और वे मेरे बच्चे होंगे।

2 शमूएल और अन्य स्थानों से दाऊद की वाचा के सूत्र का यूहन्ना द्वारा किया गया अनुवाद। मैं उनका पिता बनूँगा, और वे दाऊद की वाचा के वादों की पूर्ति में मेरे बच्चे या मेरे पुत्र होंगे। शायद तब हमें यह देखना चाहिए कि जिस तरह से दाऊद को पूरी पृथ्वी विरासत में मिली थी, उसी तरह पृथ्वी के छोर भी उसके अधिकार में दिए जाएँगे।

अब, हम परमेश्वर के लोगों को दाऊद की वाचा की पूर्ति में भी पाते हैं। आदम और हव्वा के लिए परमेश्वर के इरादे को पूरा करने के अलावा, हम परमेश्वर के सभी लोगों को दाऊद की प्रतिज्ञाओं के वारिस, परमेश्वर के पुत्रों के रूप में और दाऊद की वाचा की पूर्ति के रूप में पाते हैं जो अब पूरी धरती पर शासन कर रही है। हमने कहा कि यह 2 कुरिन्थियों अध्याय 6 के अलावा एकमात्र स्थान है। यह नए नियम में दूसरा स्थान है जहाँ दाऊद को दिया गया वाचा सूत्र अब लोगों पर लागू होता है।

इनमें से कुछ विषयों को जोड़ने के लिए, ध्यान दें कि अध्याय 22, श्लोक 4 और 5 में, हमारे पास परमेश्वर के लोग याजकों के रूप में कार्य करते हैं; वे उसका चेहरा देखेंगे, और उसका नाम उनके माथे पर होगा, और राजाओं के रूप में भी। वे हमेशा के लिए राज करेंगे। इसलिए परमेश्वर के लोग अब निर्गमन 19.6 में इस्राएल के लिए परमेश्वर के इरादे को पूरा करेंगे, जो यह था कि वे याजकों का एक राज्य होंगे।

इसलिए, हम एक नई सृष्टि, एक नया अदन, एक नया यरूशलेम, एक नई वाचा, एक नया मंदिर, एक नया लोग, एक नया पलायन, और एक नया शासन और शासन पाते हैं। हम यह कहकर इसका सारांश दे सकते हैं कि हम यहाँ जो पाते हैं वह यह है कि परमेश्वर अब अपने लोगों को अपने साथ एक नई वाचा के रिश्ते में स्थापित, पुनर्स्थापित और नवीनीकृत कर रहा है और उन्हें एक नए निर्गमन के माध्यम से एक नई सृष्टि में ला रहा है जहाँ वे एक नया यरूशलेम हैं, और अब वे शासन करते हैं और शासन करते हैं। वे एक नया राज्य हैं, और परमेश्वर एक नए शासन और शासन का उद्घाटन करता है, जो पुराने नियम और नए नियम में परमेश्वर के वादों की पूर्ति में है।

यदि आप ध्यान से मेरा अनुसरण करते हैं, तो आप देखेंगे कि यह संयोगवश है, लेकिन इनमें से सात नई चीजें थीं जो नई हैं। यह स्पष्ट रूप से प्रकाशितवाक्य की पुस्तक और संख्या सात की मुख्य भूमिका के अनुरूप है। लेकिन संक्षेप में, हम जो पाते हैं वह प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में अब लंबे समय से प्रतीक्षित चरमोत्कर्ष है, लंबे समय से प्रतीक्षित चरमोत्कर्ष, और परमेश्वर की

मुक्ति-ऐतिहासिक कहानी का लक्ष्य अब अपनी पूर्णता तक पहुँचता है जब परमेश्वर के लोग एक नई सृष्टि पर निवास करते हैं जिसमें परमेश्वर और मेमना उनके बीच रहते हैं।

यह डॉ. डेव मैथ्यूसन द्वारा न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी पर व्याख्यान श्रृंखला है। यह सत्र संख्या 30 है, जो न्यू टेस्टामेंट थियोलॉजी के प्रकाश में प्रकाशितवाक्य 21 और 22 में इफिसियों 2 की व्याख्या है।